फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

दस्तक

मण्डी के लिये उत्पादन। खेती में फैलती कीटनाशक दवाइयाँ। बढती सँख्या में मुर्गियों के कैदखाने, मुर्गीफार्म। इन तीन महीनों में हरियाणा में 150 मोरों की "रहस्यमय" मृत्यु।

नई सीरीज नम्बर **171** सितम्बर **2002**

आक्रमण की काट

सरकार से फ्रीजर विभाग बन्द करने की अनुमति ले ली है कह कर **व्हर्लपूल** मैनेजमेन्ट ने 186 मजदूरों के फैक्ट्री- प्रवेश पर रोक लगा कर उन्हें नौकरी से निकालने की कसरत शुरू कर दी है। कम्पनी के हमले के शिकार मजदूरों ने फैक्ट्री के पास धरना आरम्भ कर दिया है। व्हर्लपूल कम्पनी ने योजना बना कर, तैयारी करके यह आक्रमण किया है।

शोषकों और शोषितों के बीच युद्ध किला फतह करने से बहुत भिन्न होता है, यह बहुत जटिल युद्ध होता है। शोषितों को मटियामेट करना नहीं बल्कि शोषण बढाना और शोषितों पर जकड़ मजबूत करना शोषकों का लक्ष्य होता है। इसलिये सरकारों, कम्पनियों की नीतियों के लिये शोषितों-पीड़ितों की सहमति का जुगाड़ करना सिर-माथों पर बैठों का प्रमुख कार्य होता है। मजदूरों के भले के लिये कम्पनी कुछ कर रही है जैसी बातों पर मजदूरों की सहमति प्राप्त कर पाना बहुत कम होता है। हालात का रोना रो कर "कम बुरा-कम नुकसान" के नाम पर कम्पनी नीति. को मजदूरों के गले उतारने की कोशिशें अक्सर होती हैं।

तत्काल ताकत के आधार पर कम्पनियाँ जिस किसी/जिन किन्हीं को जब चाहें नौकरी से निकाल सकती हैं। लेकिन, ऐसा करने से जो कम्पनी में कार्यरत रहेंगे उनकी कम्पनी में कोई आस्था नहीं रहेगी। और, जिस कम्पनी में मजदूरों की रत्ती- भर भी आस्था नहीं रहती वह कम्पनी जीवित नहीं रह सकती। डर और गुण्डागर्दी से कम्पनियाँ चल सकती होती तो **गेडोर-झालानी टूल्स** फलफूल रही होती।

यह प्रत्येक कम्पनी के अस्तित्व से जुड़ा है इसलिये जिन्हें कम्पनी नौकरी से निकालना चाहती है उनकी "सहमति" के लिये कम्पनी को पापड़ बेलने पड़ते हैं...ताकि जो कम्पनी में कार्यरत रहेंगे उनकी कम्पनी में कुछ तो आस्था बनी रहे।

✱ 1995 में व्हर्लपूल कारपोरेशन ने फरीदाबाद में केल्विनेटर की फैक्ट्रियाँ लेते ही ढाई हजार मजदूरों की छँटनी की। झूठ, फरेब, अफवाह, डर और लालच को हवा दे कर कम्पनी ने मजदूरों पर भारी दबाव बनाया था। मजदूरों को फाँसने के लिये मैनेजरों, सुपरवाइजरों और मजदूरों के बीच वाले पट्ठों ने रात- दिन एक की थी। भगदड़ पैदा करने के लिये "अपना इस्तीफा दे दिया हूँ" का प्रचार करने वाले पट्ठे आज भी व्हर्लपूल में नौकरी कर रहे हैं। "बहुत पैसे दे रहे हैं" का शोर तो पूरे फरीदाबाद में मचाया गया था। **इस्तीफे देने को मजबूर करने के लिये व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट द्वारा महिला मजदूरों का गेट रोकना, दृष्टिहीन वरकरों का गेट रोकना जैसे तथ्यों पर पर्दे डाले गये।** झटके में ढाई हजार मजदूर निकाल दिये गये और तब कहा तथा काफी हद तक माना गया कि मजदूरों ने अपनी राजी से इस्तीफे दिये हैं।

साल- भर में ही "बहुत पैसे" ले कर नौकरी से निकले मजदूरों की दुर्दशा ने जगह- जगह वरकरों को चेताया। **एस्कोर्ट्स** के मजदूरों ने सबक लिया और इन 5 वर्षों में "स्वेच्छा से इस्तीफे" वाले एक के बाद दूसरे वी.आर.एस. जाल को काटा है। लेकिन जानते हुये भी अनजान बन कर, स्वयं को धोखा देने के लिये कुतर्क करने वालों की भी कमी नहीं रही है। अपने साथ काम कर चुकों की दुर्गत देख कर व्हर्लपूल के ही कई वरकर कह देते रहे हैं कि उन लोगों ने इस्तीफे दे कर गलती की। **पीड़ितों के एक हिस्से द्वारा पीड़ितों के दूसरे हिस्से को (अथवा स्वयं को) दुर्दशा के लिये दोषी ठहरांना शोषकों को बरी करना होता है, शोषकों के पक्ष को मजबूत करता है।**

✱ बड़े पैमाने पर छँटनी और वर्क लोड में भारी वृद्धि के जहर पर दो पैसे की चाशनी....

– प्लास्टिक डिविजिन के मजदूरों को निकालने के वक्त व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट को कम्पनी में कार्यरत रहनेवाले मजदूरों का ज्यादा विरोध नहीं झेलना पड़ा।

– अपने अगल-.बगल काम करते कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों की तरफ परमानेन्ट मजदूरों ने कम ही देखा है।

इन हालात में फ्रीजर विभाग के 186 मजदूरों का गेट रोकना कम्पनी को आसान लगा है।

सुपरवाइजर जब- तब धमकी देते रहे हैं कि 2300 कार्यरत परमानेन्ट मजदूरों की जगह व्हर्लपूल 750 को ही कम्पनी में रखेगी..... भुक्तभोगी होते हुये भी स्टाफ वाले अक्सर भूल जाते हैं कि कम्पनियाँ किसी की नहीं होती।

इधर रेफ्रिजरेटरों की मण्डी में महाबली व्हर्लपूल के मुकाबले में उतरी महाबली इलेक्ट्रोलक्स मारामारी बढायेगी – मजदूरों पर हमले तेज होंगे।

यह मजदूरों का विरोध ही होता है जो कम्पनियों पर लगाम लगाता है। विरोध के तरीकों पर व्यापक विचार- विमर्श प्राथमिक आवश्यकताओं में है।

सरकार से अनुमति ले ली है कह कर **टेकमसेह** मैनेजमेन्ट ने विभाग बन्द कर नौकरी से निकालने की कसरत की थी। अतिरिक्त दबाव के तौर पर उस समय फैक्ट्री में तालाबन्दी की हुई थी। ट्रान्सफर आदि के बावजूद बन्द किये विभाग के जिन मजदूरों ने इस्तीफे देने से इनकार कर दिया वे आज भी टेकमसेह में नौकरी कर रहे हैं। सेक्युरिटी ठेके पर दिये जाने के बावजूद जिन गार्डों ने इस्तीफे नहीं दिये वे अब व्हर्लपूल फैक्ट्री में उत्पादन में लगे मजदूर हैं। अब फ्रीजर विभाग के मजदूरों द्वारा इस्तीफे देने से इनकार करना बनता है। मजदूरों को "राजी" करने के लिये कम्पनी बहुत हथकन्डे अपना रही है – "कुछ ज्यादा पैसे" वाले अपने अखाड़े में मजदूरों को खींचने की जुगत कम्पनी भिड़ा रही है। अनुभव- दर- अनुभव के दृष्टिगत वरकरों द्वारा अपनी सहमति देना दुर्गत को निमन्त्रण देना है।

कम्पनी के आक्रमण की काट के लिये जिन्हें बाहर कर रखा है उनके डटे रहने से भी अधिक महत्वपूर्ण है : जो अभी कार्यरत हैं उन मजदूरों द्वारा अपनी असहमति, अपना असन्तोष जाहिर करना। असहमति- असन्तोष जाहिर करने के हजारों तरीके हैं। **फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों द्वारा अपनी-अपनी सुविधा अनुसार स्वयं विभिन्न प्रकार की हरकतें करना कम्पनी को पीछे हटने को मजबूर करने की क्षमता लिये है।**

यह ध्यान में रखने की बात है कि कम्पनी की नीतियों पर सहमति के जुगाड़ में जो सहयोगी होते हैं उन से कम्पनी के कारगर विरोध की आशा करना बिल्ली से दूध की रखवाली करवाने समान है। **(बाकी पेज चार पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

मन्थन

कटलर हैमर मजदूर : " 1995 में 1200 परमानेन्ट और 400 कैजुअल वरकर जितना उत्पादन करते थे उतना ही उत्पादन आज फैक्ट्री में कार्यरत 367 परमानेन्ट और 150 ट्रेनी वरकरों से कम्पनी डिमाण्ड करती है। टाइम स्टडी.... एक मिनट में इतने नट-बोल्ट..... प्रति मिनट के हिसाब से उत्पादन निर्धारित किया है। काम का बहुत ही ज्यादा बोझ है – निर्धारित उत्पादन से कम होने पर वेतन में से पैसे काट लेते हैं। कटौती रोकने के प्रयास में शिफ्ट समाप्ति के बाद एक-डेढ घण्टे तक काम करो फिर भी कटौती.... कटलर हैमर में बिना किसी भुगतान वाला ओवर टाइम करना पड़ता है। वर्क लोड में की गई भारी वृद्धि के बदले में कम्पनी ने मजदूरों को कुछ दिया नहीं है।

" लीडरों के पीछे एकजुट हो कर हम ने कम्पनी का विरोध करने की कोशिशें की हैं। हम ने लीडरों को 100-100 रुपये चन्दा दिया है और मैनेजमेन्ट की गोद में बैठते देख उन्हें बदल भी दिया है। कम्पनी ने आज ऐसे व्यक्ति को लीडर की मान्यता दी हुई जिसे 367 में से 360 मजदूरों ने खुलेआम नकार रखा है।

"मुझे तो यकीन हो गया है कि लीडरों से कुछ होने वाला नहीं है। पिछले साल हड़ताल में नौकरी से निकाले गये लीडरों की आज , 11 अगस्त की मीटिंग में मैं इसीलिये नहीं गया।

" लीडरों के पीछे एकजुट हुओं को लगी चोटों ने हर एक को अपने-अपने बचाव के चक्कर में डाला है। लेकिन अकेले-अकेले में लाख पापड़ बेलने पर भी कोई राहत नहीं है, कोई बचाव नहीं है। ऐसे तो जीना मुश्किल है, कोई और रास्ते ढूँढने होंगे।"

और बातें यह भी

उत्तर प्रदेश पुलिस सिपाही : " मुख्यमन्त्री जिले के दौरे पर आ रही थी। कहीं सड़क पर घण्टों खड़े रहने की बजाय मुझे अस्पताल में 'ऑन बेड' ड्युटी का आदेश मिला। अस्पताल में हम 10 सिपाही ऐसी ड्युटी पर थे। पूछने पर पता चला कि हमारे रक्त का ग्रुप मुख्यमन्त्री के रक्त-ग्रुप का है। हमले अथवा एक्सीडेन्ट की स्थिति में मुख्यमन्त्री को खून की आवश्यकता पड़ने पर रक्त देने के लिये हम 10 सिपाहियों की अस्पताल में बिस्तर पर लेटे रहने की ड्युटी थी। पता चला कि हर जिले में मुख्यमन्त्री के दौरे के समय ऐसे दस सिपाही अस्पताल में 'ऑन बेड' ड्युटी पर रखे जाते हैं। मुख्यमन्त्री बदलते रहते हैं और उनके रक्त-ग्रुप के अनुसार सिपाही भी बदलते रहते हैं लेकिन रक्त देने के लिये 'ऑन बेड' ड्युटी की प्रथा जारी रहती है। मुझे सड़क पर घण्टों खड़े रहने से भी ज्यादा अपमानजनक यह 'ऑन बेड' ड्युटी लगी।"

स्टार वायर मजदूर : " बल्लभगढ में मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में परमानेन्ट मजदूर मात्र 80 हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों की सँख्या 1500-1600 है। हैल्परों को कहने को 2100 रुपये महीना तनखा देते हैं पर इन में से 4 साप्ताहिक छुट्टियों के पैसे काट लेते हैं। ई.एस.आई. के नाम से पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। कैन्टीन में दुभान्त करते हैं– परमानेन्ट वरकरों को 2 रुपये में एक सब्जी व 4 रोटी और ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों को यही 5 रुपये में। फैक्ट्री में लैट्रीन कम हैं – भीड़ लगी रहती है, बहुत गन्दी रहती हैं और कभी-कभी फैक्ट्री में ही बाहर बैठ जाते हैं।"

सी एम आई वरकर : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जनवरी से लागू डी.ए. के पैसे अगस्त तक नहीं दिये हैं। इधर स्टाफ वालों को कम्पनी जबरन नौकरी से निकालने लगी है।"

भारत मशीन टूल्स मजदूर : " सैक्टर-6 में प्लॉट 126 और 133 (आमने-सामने) में उन वरकरों से भी काम करवाते हैं जिनके नाम कम्पनी के खाते में नहीं होते – किरण इंजिनियरिंग के नाम पर रख लेते हैं या वैसे ही कच्चे कागजों पर रख लेते हैं। रोज सामान्यतः 12 घण्टे काम करवाते हैं लेकिन कागजों में ओवर टाइम काम दिखाते नहीं। इस वर्ष 28 फरवरी को कम्पनी ने 7 मजदूरों की यह कह कर छँटनी कर दी कि कम्पनी में काम नहीं है। दबाव के बावजूद मजदूरों ने इस्तीफे नहीं दिये और श्रम विभाग में शिकायत की। श्रम विभाग ने आँखों पर पट्टी बाँध और जेब गरम कर कम्पनी की बात मानी। छँटनी में कानून का प्रावधान है कि कम्पनी में फिर मजदूरों की जरूरत पड़ने पर छँटनी किये गये वरकरों को पहले भर्ती किया जायेगा। क्या करें कानून का ?

" भारत मशीन टूल्स में ओवर टाइम दिखाते नहीं और पेमेन्ट सवा की दर से करते हैं। डी.ए. के आँकड़े आते रहते हैं पर महँगाई भत्ते के पैसे मजदूरों को कम्पनी देती ही नहीं। वार्षिक वेतन वृद्धि जनवरी से देने की बजाय जून की तनखा में लगाई है। पिछले वर्ष देय वर्दी अब तक नहीं दी है। हाथ धोने के साबुन की बट्टी कम्पनी मुँह देख कर देती है – किसी को एक , किसी को दो , किसी को तीन .....और कई बार कल-परसों कर महीना निकाल उस महीने की साबुन की टिकियाँ कम्पनी खा जाती है।"

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

अंजीरा उद्योग वरकर: "सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1300-1400 रुपये महीना वेतन देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी. एफ. नहीं।"

शिवाय फोरजिंग मजदूर : " हैल्परों को 1200-1300-1400 , प्रेस ऑपरेटरों को 1800 और कारीगरों को 2000 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. नहीं।"

चाँद इन्डस्ट्रीज मजदूर : " एन एच 1 स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा हमें आज 20 अगस्त तक नहीं दी है।"

नेस्टर फार्मास्युटिकल मजदूर : " दो नम्बर में अनाज गोदाम के पास स्थित दवाई कम्पनी में 80 प्रतिशत वरकर कम्पनी ने 4-5 ठेकेदारों के जरिये रखें हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते और महीने के तीसों दिन काम की तनखा 1500 रुपये है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते।"

प्रयाग इन्डस्ट्रीज वरकर : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1300 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. नही।"

नागपाल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 65 सैक्टर-6 में बरसों से काम कर रहों को कैजुअल कहते हैं और महीने के 1600 रुपये देते हैं। पी. एफ. नहीं है। बड़ा साहब बहुत गालियाँ देता है।"

ग्रेविटास इन्टरप्राइजेज़ मजदूर : " प्लॉट 61 सैक्टर-59 में ई.एस.आई. के फार्म भर लेते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। ओवर टाइम काम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं और वह भी दो महीने बाद।"

बेलमेक्स मजदूर : "प्लॉट 125 सैक्टर-24 में कैजुअल वरकरों को 1275 रुपये महीना तनखा देते हैं। साढे आठ से 5 बजे की एक शिफ्ट है लेकिन हर रोज 4 घण्टे ओवर टाइम अनिवार्य है और नियम बना रखा है कि काम खत्म करके जाना है चाहे रात का एक बज जाये। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से और 12-16 घण्टे काम करवाती कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती।"

विजय टूल्स-संजय टूल्स मजदूर : "मुजेसर में एक ही शेड के नीचे बाप और बेटे के नाम से दो कम्पनियाँ हैं। हैल्परों को 1300 और ऑपरेटरों को 1400-1700 रुपये महीना तनखा देते हैं। ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से। लेबर इन्सपैक्टर 20 अगस्त को आया तब उन सब को बाहर निकाल दिया जिनकी ई.एस.आई. नहीं है – डेढ घण्टे बाहर ही रखा और साहब के जाने के बाद काम पर लगाया।"

नौनिहाल इलेक्ट्रोप्लेटर्स वरकर : "तनखायें देरी से देने को साल से ऊपर हो गया है – श्रम विभाग में हर दूसरे-तीसरे महीने हम शिकायत करते रहते हैं इसलिये दूसरे महीने के अन्त तक तनखा देनी पड़ती है। ढाई साल से कम्पनी हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं कर रही जिसकी 5 शिकायतें यहाँ क्षेत्रिय भविष्य निधि आयुक्त को करने के बाद इधर दो शिकायतें हम ने दिल्ली में केन्द्रिय भविष्य निधि आयुक्त को की हैं। नौकरी से इस्तीफा देने के बाद हिसाब नहीं देते – कहते हैं कि पाँच दिन बाद आना और उनके पाँच दिन दो महीने में भी पूरे नहीं होते।"

दिल्ली हो चाहे मुम्बई

मुम्बई से युवा मजदूर का खत : " मैं भगवती इन्टरप्राइजेज सिलाई गारमेन्ट में काम कर रहा था। मुझ अकेले से पाँच मशीनों पर प्रोडक्शन लेते थे। सुबह साढे नो बजे से रात 11 बजे तक काम लेते थे। न तो ओवर टाइम देते थे, न ही ई.एस.आई., न ही फण्ड, न ही बोनस, न चाय, न नाश्ता। पेमेन्ट का भी कोई फिक्स टाइम नहीं था। मैं 10 दिन के लिये गाँव गया था। वापस आने पर कम्पनी, भगवती इन्टरप्राइजेज, श्रीजी इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, गाला नं. 136, सुभाष रोड़, जोगेश्वरी (ईस्ट) में गया तो पता लगा कि मुझ से कम पेमेन्ट में ऑपरेटर काम कर रहा है।

" इस व्यवस्था को कायम रखने वाले सिर्फ अपनी हवस बुझाने के लिये मजदूरों के लिये ऐसी हालात पैदा कर रहे हैं कि इन्सान अपनी इन्सानियत भूलता चला जा रहा है। और यह सब सिर्फ अपने माँ- बाप, भाई- बहन, बीबी- बच्चों को एक वक्त की रोटी खिलाने के लिये।"

आनन्द इन्टरनेशल वरकर : " (ओखला में एक फैक्ट्री गेट पर कई सिलाई कारीगरों ने कई प्रकार की बातें की – उनमें से कुछ यह हैं।) दिल्ली में कम्पनी की तीन फैक्ट्री हैं, डी- 3 सी- 113, ए- 185 ओखला फेज- 1 ... तीन नहीं, पाँच फैक्ट्रियाँ हैं और 5 हजार वरकर काम करते हैं। किसी भी फैक्ट्री में कोई भी सिलाई कारीगर परमानेन्ट नहीं है। भर्ती के समय ही 8- 10 कागजों पर दस्तखत करवा लेते हैं जिनमें कोरे कागज और ब्लैंक वाउचर भी होते हैं। किसी भी कारीगर को ई.एस.आई कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं, बोनस नहीं, सरकारी ग्रेड नहीं। कभी कभार लेबर इन्सपैक्टर आता है और खानापूर्ति कर मुट्ठी गरम कर चला जाता है।

" सिले कपड़े एक्सपोर्ट वाली अन्य फैक्ट्रियों की ही तरह आनन्द इन्टरनेशनल में रोज 12 घण्टे तो काम करना ही पड़ता है। हफ्ते के सातों दिन काम करना पड़ता है। ज्यादा आर्डर होने पर सुबह 9 बजे से रात 2 बजे तक काम करना पड़ता है।

" आनन्द इन्टरनेशनल में दिहाड़ी की बजाय पीस रेट देते हैं। पैसे कमाने आये हैं सोच कर पैसे कमाने के चक्कर में हम फँस जाते हैं। तन- मन तोड़ कर काम में भिड़ते हैं और जब दो पैसे फालतू कमाने लगते हैं तब कम्पनी पीस का रेट कम कर देती है। एक कॉलर के 7 रुपये देंगे, फिर 6 कर देंगे और 5, 4, 3 रुपये की तरफ बढेंगे। हमारी मेहनत बढती जाती है और आमदनी घटती जाती है।

"घण्टे में इतने पीस दोगे तो 14 रुपये मिलेंगे के हिसाब से पेमेन्ट देते हैं। मशीन खराब, माल नहीं है, माल खराब, निर्धारित रफ्तार से उत्पादन नहीं कर पाते... हर बात पर पैसे कारीगर के काट लेते हैं। फैक्ट्री में उपस्थित रहने पर तनखा नहीं बनती बल्कि 12 घण्टे काम में जुटे रहने पर भी टारगेट पूरा नहीं किया कह कर 10 घण्टे के पैसे देते हैं, 2 घण्टे के काट लेते हैं।

" आनन्द इन्टरनेशनल में 12 घण्टे खटने के दौरान कम्पनी एक चाय तक नहीं देती। हद तो यह कर रखी थी कि पेशाब करने के लिये भी टोकन ले कर जाओ! सौ मजदूरों के बीच एक टोकन..... हम लोगों ने विरोध कर पेशाब के लिये टोकन को खत्म करवाया है।

" जहाँ 5 रुपये में एक कैन पानी लेना पड़ जाये, कमरे का किराया 700 रुपये हो.....

" सुबह 9 से रात 9 बजे और फिर एक घण्टा एक्स्ट्रा की ड्युटी आनन्द इन्टरनेशनल में चल रही थी। इधर कम्पनी ने कहा कि सुबह 8 से रात 8 बजे तक ड्युटी करो और रात 9 बजे तक काम करो। दूर से आते हैं, पानी भरना ही सुबह भारी पड़ता है, फिर खाना बनाना... रात 10- 11 बजे कमरे पर पहुँचते हैं, सुबह 8 बजे फैक्ट्री नहीं आ सकते।

" ऊपर से ए- 185 फैक्ट्री में मास्टर ने कारीगर पर हाथ छोड़ दिया। रेट 14 से 16 रुपये करने, ड्युटी सुबह 9 बजे से ही रखने और मारपीट के खिलाफ काम बन्द कर सी- 113, ए- 185 और डी- 3 के सिलाई कारीगर 12 अगस्त को डी- 3 फैक्ट्री गेट पर जमा हो गये। बड़ा साहब आया। रेट में आठ आने बढाया है तथा ड्युटी 9 बजे से ही रहेगी। कह रहा था कि समस्याओं का पता ही नहीं उसे – अब देखेगा, सोचेगा, करेगा।

" पुलिस रात को ड्युटी छूटने पर कमरे जाते समय तो हमें परेशान करती ही है, डी- 3 पर कारीगरों के जमा होते ही पुलिस कम्पनी की मदद के लिये आ गई।"

ए- 4 ओखला फेज-1 मजदूर : " इस एक ही पते पर तीन कम्पनियाँ हैं। फैक्ट्री में मैटल पॉलिश का काम होता है। हम परमानेन्ट मजदूर हैं और ई.एस.आई. तथा प्रोविडेन्ट फण्ड का प्रावधान लागू है। कुछ समय से मैनेजमेन्ट कह रही थी कि इस्तीफे दे कर हिसाब ले लो और फिर यहीं फैक्ट्री में काम के ठेके ले लो। हम जानते हैं कि पीस रेट पर काम शरीर को तोड़ना लिये है और अच्छी कमाई की बातें हवाई हैं। हम ने इस्तीफे नहीं दिये तो 21 जुलाई को मैनेजमेन्ट ने मशीनों के कनेक्शन कटवा दिये और हम ड्युटी के समय खाली बैठे रहे। अगले रोज, 22 जुलाई को कम्पनी ने 13 पॉलिश कारीगरों को फैक्ट्री गेट पर रोक दिया और उस रोज से हम फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे हैं। मैनेजमेन्ट ने जुलाई महीने की पूरी तनखा हमें दी है – कह रही थी कि दस दिन के पैसे हिसाब में से काट लेगी। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की है और गेट पर जमे हैं।"

सुरक्षा बल

● फेडरल सेक्युरिटी कम्पनी में गार्ड योगेन्द्र ने नौकरी से निकाल दिये जाने पर श्रम विभाग में केस दायर कर दिया। दिन में एक बजे, 5 सितम्बर को बाटा- हार्डवेयर रोड़ पर लाल फैक्ट्री के निकट योगेन्द्र की साइकिल के सामने फेडरल सेक्युरिटी कम्पनी ने गाड़ी लगा कर उसे रोक लिया। गाड़ी में सवार लोगों ने नल के हत्थे और चाकुओं से योगेन्द्र की हत्या कर दी। फेडरल सेक्युरिटी के सैक्टर- 14 स्थित कार्यालय पर खून के धब्बों से सनी मारुति गाड़ी मिली। पुलिस ने वहाँ से 4 को गिरफ्तार कर 8 लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर दिया है।

● हरियाणा में जेलों का इन्सपैक्टर जनरल रविकान्त, आई.पी.एस., हत्या के आरोप में गिरफ्तारी के वारँट जारी होने के बाद फरार है।

● ऑन ड्युटी इन्सपैक्टर जनरल पुलिस हरीश कुमार तीन महीने से "फरार" था। पत्नी और ससुर के नाम से दो फैक्ट्रियाँ चला रहे उच्च पुलिस अधिकारी हरीश कुमार की गिरफ्तारी का आदेश स्मगलिंग और 50 करोड़ रुपये की आयात शुल्क छिपाने के आरोप में दिया गया था। दिल्ली में पुलिस ने आई.जी. हरीश कुमार को 5 सितम्बर को पकड़ कर जेल भेज दिया।

● ".....अगस्त के दूसरे हफ्ते में राजस्थान के 16 जिलों से आये लगभग 50 जन संगठनों की जयपुर में बैठक हुई। इस बैठक में सभी प्रतिनिधियों ने पाकिस्तान के साथ राजस्थान की 1040 कि.मी. लम्बी सीमा पर फौज के तैनात किये जाने की कड़ी निन्दा की। ....जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर तथा श्रीगंगानगर के सीमावर्ती इलाकों में फौज के तैनात किये जाने की वजह से वहाँ के सूखाग्रस्त निवासियों का जीना हराम हो गया है।

... सीमा के बहुत से इलाकों में वहाँ के निवासियों का जाना- आना खतरनाक है क्योंकि चारों ओर सुरँग लगाये गये हैं। इन सुरँगों की वजह से 40 से अधिक स्थानीय गाँव वासी मर चुके हैं और अनगिनत गाय- भैंस भी मारी गई हैं। बड़ी सँख्या में गाय- भैंस घायल भी हुई हैं।.....

हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि सुरँगों की वजह से अनउपजाऊ हो गई है।...

..... फौजी बहुत सारा पानी खर्च कर लेते हैं और बाड़मेर, जैसलमेर व जोधपुर के कई गाँवों के सभी जल स्रोतों पर फौजियों ने कब्जा कर रखा है। इसकी वजह से स्थानीय गाँव वासियों को पानी लेने के लिए 4- 5 कि.मी. चल कर जाना पड़ता है।

बहुत सारे मैदानी इलाकों पर लोगों और मवेशी का जाना मना हो गया है जिसके कारण गाय- भैंस चराने की जगहों की बेहद कमी पड़ गई है।.....

.... इन इलाकों में कई बार फौजियों ने गाँव की लड़कियों और महिलाओं से बलात्कार किया है और उन पर शारीरिक हमला किया है।

.... सीमा के इलाकों में फौज की मौजूदगी समाज संसाधनों पर भारी बोझ है।...." ('मजदूर एकता लहर' पत्रिका, सितम्बर 1–15, 2002)

कुफल है सफलता

ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में , वर्तमान व्यवस्था में सफलता- प्रगति के लिये यह अत्याधिक दबाव हैं कि

– इंग्लैण्ड में बच्चों में शराब की लत बढ रही है। तेरह वर्ष से कम आयु के आधे से ज्यादा बच्चे चोरी- छिपे शराब पीते हैं। बीमारी के इलाज की बजाय बीमारी के लक्षणों पर मरहम लगाने में विशेषज्ञों के विशेषज्ञ , नेता लोग बच्चों के शराब पीने पर नियन्त्रण के लिये बच्चों के वास्ते सरकारी शराबघर खोलने की नीति पर चर्चायें कर रहे हैं।

– अमरीका में बच्चों में बन्दूकों की लत बढ रही है। विद्यालयों में बच्चों द्वारा सहपाठियों व अध्यापकों पर बन्दूक तानना और गोलियाँ चलाना बढ रहा है। बीमारी के लक्षणों को हवाई बमबारी से मटियामेट करने को बीमारी का इलाज बताती दादा सरकार ने अमरीका में विद्यालयों के प्रवेश- द्वारों पर पुलिस तैनात कर दी है और विद्यालयों के अन्दर पुलिस की गश्त बढा दी है।

– जापान में बच्चों में आत्महत्या की बढती प्रवृति .....

मण्डी- मुद्रा में आँकी जाती सफलता- प्रगति के लिये मारामारी का ही लक्षण है 2 सितम्बर को फरीदाबाद में जवाहर कालोनी स्थित कुरुक्षेत्र विद्यालय में स्कूल प्रबन्धन द्वारा एक छात्र की इस कदर पिटाई कि लड़का मरते- मरते बचा है।

फास्ट फूड

काम की मात्रा का बढना और फास्ट फूड का फैलना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। फास्ट फूड तथा काम की जुगलबन्दी के तन और मन- मस्तिष्क पर घातक दुष्प्रभावों को पॉल लफार्ग ने 1848 मे " दी राइट टु बी लेजी" पुस्तक में लिखा। इधर अमरीका में डॉ. मोरा वोलकोवा के नेतृत्व में मनोचिकित्सकों के एक दल ने अनुसन्धान के पश्चात फास्ट फूड की तुलना घातक बमों से की है। तन- मन के स्वास्थ्य के लिये फास्ट फूड उतने ही घातक हैं जितने कि विनाशकारी बम।

आक्रमण की काट (पेज एक का शेष)

बाटा हो चाहे व्हर्लपूल, कम्पनी के आक्रमण के समय भय- दोहन करने वालों से विशेष सावधानी बरतना जरूरी होता है।

दो हजार और दस हजार में फर्क परमानेन्ट वरकरों के सिर पर लटकी तलवार है। कैजुअल और ठेकेदारों के वरकरों के साथ तालमेल बढाना परमानेन्ट मजदूरों के अपने हित में है।

मजदूरों द्वारा कम्पनियों, सरकारों की नीतियों को अपनी सहमति देने से इनकार करना शोषण के खात्मे की शुरूआत होगी।

गुण्डागर्दी के पीछे

स्काईटोन इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : " रेलवे , बिजली घरों , कोयला खदानों आदि के लिये केबल्स बनाती प्लॉट 42 - 43 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 28 अगस्त को सुबह मैनेजमेन्ट गुण्डे लाई। हाकी , सरिये , चाकू , कट्टों से लैस गुण्डों ने फैक्ट्री गेट से ही हाथा- पाई शुरू कर दी और मशीनों तक मारपीट करते गये। मजदूरों ने विरोध किया और गुण्डों की हवा निकल गई। मैनेजमेन्ट ने 12 मजदूरों के खिलाफ पुलिस में केस दर्ज किया और दोपहर को जबरन सब मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया गया। फैक्ट्री में उत्पादन 28 अगस्त से बन्द है। कम्पनी की सेक्युरिटी ड्युटी पर है फिर भी 2 सितम्बर को पुलिस की मदद से मैनेजमेन्ट ने नई सेक्युरिटी के नाम से 16 लोगों को फैक्ट्री में घुसाया। दो सितम्बर को ही जनरल मैनेजर ने कार में बन्दूकधारियों के संग फैक्ट्री गेट के चक्कर लगा कर मजदूरों को डराने की कोशिश की। कम्पनी धमकियाँ दे रही है कि 1990 में 14 मजदूरों पर पुलिस केस बना कर उन्हें नौकरी से निकालने वाली बात दोहरायेगी। जिन 14 मजदूरों पर आपराधिक मुकदमा चलाया गया वे सब अदालत से बरी हो गये हैं तथा 5 - 6 का नौकरी पर बहाली के लिये श्रम न्यायालय में केस चल रहा है।

"इस वर्ष 28 जनवरी को रात 10 बजे स्काईटोन फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में फिटर राजेन्द्र घायल हुआ। कम्पनी में एम्बुलेन्स नहीं है। मैनेजमेन्ट रात को फैक्ट्री में नीचे वाले फोन काट देती है और ऊपर एक फोन ताले में बन्द कर देती है ताकि मजदूर फोन नहीं कर सकें। जनवरी की ठण्डी रात घायल मजदूर को फैक्ट्री में ही रहना पड़ा और सुबह 6 बजे ई.एस.आई. अस्पताल ले जाया गया जहाँ डॉक्टरों ने हालत बहुत गम्भीर देख दिल्ली सफदरजंग अस्पताल भेज दिया। दिल्ली में 31 जनवरी को राजेन्द्र की मृत्यु हो गई।

" मृत्यु सुबह 8 बजे हुई थी पर मैनेजमेन्ट ने यह जानकारी 12 बजे दी और तब तक फैक्ट्री में उत्पादन हुआ। दिल्ली से राजेन्द्र की लाश लाने के लिये कम्पनी गाड़ियों में सौ के करीब मजदूरों को ले गई और बाकी मजदूरों ने फैक्ट्री गेट पर इन्तजार किया। बाद में मैनेजमेन्ट ने 31 जनवरी की मजदूरों की तनखा काट ली। पहली फरवरी को नारनौल के पास गाँव में राजेन्द्र के दाहसंस्कार में मजदूर शामिल हुये। मैनेजमेन्ट भी वहाँ गई थी। कम्पनी ने पहली फरवरी के बदले में परमानेन्ट मजदूरों की एक छुट्टी काट ली और कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों की एक दिन और की दिहाड़ी काट ली। एक दिन की तनखा मजदूरों ने राजेन्द्र के परिवार को दी।

" फिटर राजेन्द्र फैक्ट्री में ओवर टाइम काम करते समय घायल हुआ था लेकिन कम्पनी ने उसे सामान्य ड्युटी पर दिखाया। कम्पनी ओवर टाइम काम को कागजों में दिखाती ही नहीं है। स्काईटोन फैक्ट्री में ओवर टाइम के लिये जबरन रोका जाता है और ओवर टाइम काम की पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से की जाती है।

" फिटर राजेन्द्र की मृत्यु पर फैक्ट्री में एम्बुलेन्स रखने , ओवर टाइम काम दिखाने , रात को फोन नहीं काटने की डिमाण्डें तथा लाश लाने व दाहसंस्कार के दो दिन की तनखा मैनेजमेन्ट द्वारा काट लेने से स्काईटोन कम्पनी और मजदूरों के बीच टकराव बढे।

" दबावों के बावजूद मजदूरों ने ओवर टाइम पर रुकने से इनकार कर दिया। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में चाय आने पर रोक लगा दी – स्काईटोन फैक्ट्री में 200 परमानेन्ट , 150 कैजुअल और 50 ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकर हैं लेकिन कैन्टीन नहीं है। श्रम विभाग और बी एम एस यूनियन नेताओं से साँठगाँठ कर कम्पनी ने गुपचुप स्टैंडिंग आर्डर बदलवाये और रिटायरमेन्ट आयु घटा कर दो मजदूरों को 55 वर्ष की आयु में रिटायर कर दिया।

" कम्पनी ने 28 अगस्त को मारपीट करने आये गुण्डों के सरगना को ठेकेदार बताया है लेकिन फैक्ट्री में पहले से मौजूद 6 ठेकेदारों को कागजों में दिखाती ही नहीं। स्काईटोन केबल्स फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में कई तो बच्चे हैं और इन वरकरों को 1200 से 1800 रुपये महीना तनखा दी जाती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं..... रिकार्ड में यह मजदूर हैं ही नहीं।

" कैजुअल वरकरों से भर्ती के समय ही इस्तीफे लिखवा लिये जाते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते, ज्यादा चोट लगने पर कच्ची पर्ची बना देते हैं। फैक्ट्री में कोई दवाई नहीं , फस्ट एड नहीं।

" स्काईटोन केबल्स में परमानेन्ट मजदूरों की तनखायें भी बहुत कम हैं। पन्द्रह साल की सर्विस वालों की भी तनखा मात्र 2500 - 2600 रुपये महीना है। समझौते अनुसार सितम्बर 2001 से देय डी.ए. के 65 रुपये 8 पैसे भी कम्पनी ने परमानेन्ट वरकरों को नहीं दिये हैं।

" साइकिल स्टैण्ड कम्पनी ने फैक्ट्री गेट के बाहर बनाया है। दो- तीन महीने में एक साइकिल तो चोरी हो ही जाती है पर कम्पनी जिम्मेदारी नहीं लेती।

" 28 अगस्त से मशीनें बन्द हैं और मजदूर फैक्ट्री के बाहर। मजदूरों के अनुरोध पर 2 सितम्बर को स्टाफ के 125 लोग भी फैक्ट्री के बाहर रुक गये तो कम्पनी ने पुलिस बुला कर स्टाफ को फैक्ट्री के अन्दर भेजा।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।